रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालय वातावरण का उसमें अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of School Environment on Creativity of Students Studying in RAMSA and Non Government School

'सुखी चौधरी एवं ''डॉ. (श्रीमती) राजकुमारी परिहार

'रिसर्च फैलो, पीएच.डी. (षिक्षा), टांटिया विष्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
''प्राचार्या, श्री माधव टी. टी. महाविद्यालय, लाडनूं– 341306 (नागौर–राजस्थान)

प्रस्तावना –

वैश्वीकरण की प्रक्रिया आज हमारे देश में एक न रुकने वाली प्रक्रिया हो गयी है। इसके प्रभाव से सभी क्रियाकलाप व्यक्तिगत स्तर से राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर के रूप में बदल गये हैं। यह सभी सामाजिक प्रणालियों और उसकी उप–प्रणालियों में फैल गयी है, यह सब जीवन के सामाजिक, शैक्षिक एवं सूक्ष्म क्षेत्रों पर उसके प्रभाव की वजह से हुआ है, चाहे वो प्रभाव सकारात्मक हो या नकारात्मक। यहाँ तक कि जो लोग इसका विरोध करते हैं वो भी इसकी पकड़ में दिखाई देते हैं। संसार के शासनक्रम की विशेषता एकध्रुवीय प्रणाली (एकाधिकार) वाली हो गयी है जहाँ विकसित राष्ट्र पूरे बाजार नियमों को चलाते हैं उनकी यह शक्ति विकासशील राष्ट्रों के लोगों की जीवन प्रणाली पर हावी है और उनके जीवन स्तर को घटाती है। यह नागरिकों और समाज के विभिन्न वर्गों एवं सम्पूर्ण समाज के लोगों की एक दूसरे के प्रति अतःक्रिया पर गहरी जड़ वाला प्रभाव छोड़ रही है, यहाँ तक कि तीसरी दुनिया के देशों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता पर भी इस घटना का प्रभाव पड़ रहा है।
भारत में 14 से 18 आयु वर्ग के समूह का अनुपात भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत है। राष्ट्र स्तरीय शैक्षिक सांख्यिकी प्रतिवेदन 2005–06 के अनुसार देश के माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 1,06,084 तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 53,619 है। इनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 3.84 करोड़ थी। विद्यालय नामांकन में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है। राष्ट्र के समग्र उत्थान के लिए इस आयु वर्ग के समूह पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की गई तथा इस समूह को शत्–प्रतिशत्
माध्यमिक शिक्षा से जोड़ने की परिणिति के रूप में यह अभियान (राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान) आरएएमएसए–रमसा आरम्भ किया गया है।

लक्ष्य तथा उद्देष्य –
माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण की चुनौतीपूर्ण अवधारणा को माध्यमिक शिक्षा की सर्व सुलभता, समानता, सामाजिक न्याय तथा प्रासंगिक पाठ्यक्रम संरचना के संदर्भ में अवगत करवाने की आवश्यकता है।
सामान्य विद्यालय अवधारणा(कॉमन स्कूल) को प्रोत्साहित करना, सभी प्रकार के स्कूलों यथा सरकारी, अनुदानित, गैर अनुदानित विद्यालयों के सहयोग से माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
उपर्युक्त लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उद्देश्य निम्नांकित है –

1. माध्यमिक स्तर हेतु निर्धारित किये गये मानदण्डानुसार सभी प्रकार के विद्यालयों में भौतिक सुविधाएँ, स्टाफ की पूर्ति को सुनिश्चित करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की पहुँच हेतु सुविधाएँ प्रदान करना।
3. लिंग, आर्थिक–सामाजिक स्तर, विकलांगता के आधार पर कोई विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा से वंचित न रहे इसे सुनिश्चित करना।

4. माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में बौद्धिक, सामाजिक व सांस्कृतिक अधिगम में वृद्धि हो।
5. सभी विद्यार्थी गुणवतापूर्ण माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करें। इसे सुनिश्चित करना।
6. प्रत्येक 5 किमी की दूरी पर माध्यमिक तथा 7–10 किमी की दूरी पर उच्च माध्यमिक विद्यालय उपलब्ध कराना।
7. 2017 तक माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को प्राप्त करने का लक्ष्य तय करना तथा 2020 तक माध्यमिक शिक्षा में शत् प्रतिशत ठहराव सुनिश्चित करना।
8. समाज के विशेषवर्ग विशेषकर लड़कियों तथा कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों, दुर्गम व ग्रामीण स्थानों के प्रवर्जित विद्यार्थियों को कम खर्चीली माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध करवाना।
9. समान स्कूल व्यवस्था में उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करना।

आज भी हमारा शिक्षा पर व्यय कुल बजट का मात्र 3 प्रतिशत से भी कम है। शिक्षा को निवेश न समझकर आज भी खर्चा समझा जा रहा है और पूरी शिक्षा व्यवस्था प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार है। गुणवत्ता का निरन्तर ह्रास हो रहा है, एक तरफ पब्लिक स्कूल हैं जो शिक्षा को एक वस्तु की तरह समझने का विकसित देशों का ऐजेण्डा आगे बढ़ा रहे हैं दूसरी तरफ सरकारी विद्यालय हैं जो शिक्षकों व संसाधनों के अभाव से झुझते हुये अपनी गुणवत्ता निरन्तर गवां रहे हैं। ऐसे में शिक्षा का प्रबन्धन एवं प्रशासन केन्द्र बिन्दु बन जाता है। शिक्षा का प्रबन्धन और प्रशासन कोई सरल कार्य नहीं है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व :–

देश की सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, तकनीकी आदि परिस्थितियों का प्रभाव विद्यालय की शिक्षा पर पड़ता है। वर्तमान में समाज की संरचना अत्यन्त विस्तृत एवं जटिल है। जहाँ तक बौद्धिक, व्यावसायिक तथा वैज्ञानिक उन्नति का प्रश्न है, वर्तमान में वह चरमोन्नति पर पहुँची हुई है।

वर्तमान में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालयों का अत्यधिक विस्तार हुआ है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। देश की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने, शिक्षा का व्यापक प्रसार करने एवं सबके लिए षिक्षा सुलभ बनाने के लिये सरकारों ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी अनेक उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित किये हैं। शहरी क्षेत्रों में भौतिक एवं मानवीय संसाधन आसानी से सुलभ हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में इन संसाधनों का अभाव है। इसलिये ग्रामीण क्षेत्रों में रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालय विद्यालय वातावरण का उसमें अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर प्रभाव को जानना भी आवष्यक हो जाता है।
प्रो. किरात जोशी ने कहा कि ''आज के संसार के मूल्य कई समस्याओं से गुजर रहे हैं और शिक्षा स्वयं इन समस्याओं का समाधान हो सकती है। इसलिये शिक्षा का वातावरण प्रतिष्ठा से परिपूर्ण हो एवं शैक्षिक वातावरण निर्माण भी इस प्रतिष्ठा के साथ जुड़ा हो जो कि वह हमारे समाज की आशा और आकांक्षा के अनुरूप हो। इस दिशा में शिक्षकों और आचार्यों की भूमिका का बहुत महत्व है क्योंकि ये व्यक्ति ही शैक्षिक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।''

प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के अन्तर्गत 6–14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा के साथ साथ गुणवत्ता आधारित शिक्षा का प्रावधान त्ज्म 2009 में किया गया।
इस अध्ययन के माध्यम से सरकार तथा विद्यालय प्रबंधन को भी ज्ञान होगा कि विद्यालयी वातावरण को उन्नत करने के लिये उनको अपने स्तर पर कौन कौन से प्रयास करने चाहिये। विद्यालयी वातावरण में सुधार अन्ततोगत्वा विद्यालय की निष्पति में सुधार लायेगा और शिक्षा व विद्यालय के उद्देश्यों की प्राप्ति में उनका योगदान बढ़ेगा। उनको उन क्षेत्रों का पता चलेगा जिनमें उनकी कमजोरी है। अपनी कमजोरी दूर कर प्रभावशाली षिक्षा देने में सक्षम होंगे। अच्छा शैक्षिक नेतृत्व शिक्षा व्यवस्था का आधारभूत स्तम्भ है। इस स्तम्भ को मजबूत करने वाले उपाय यह अध्ययन प्रस्तुत करेगा।

इस क्षेत्र में हुये अध्ययनों से यह सिद्ध हो चुका है कि बालक में मानसिक संतुलन और विद्यालय बातावरण में संबंध होता है। आज के विद्यार्थी देश के भावी नागरिक हैं इनकी गुणवत्ता एवं उनके उत्तम मनो शारीरिक स्वास्थ्य पर देश का भविष्य टिका है अतः इसकी प्राप्ति के लिये विद्यालय का वातावरण अच्छा व सकारात्मक होना अति आवश्यक है।विद्यालय वातावरण के महत्व को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों में विकसित होने वाले अनेक गुणों, विशेषताओं व कौशलों से जुड़ा हैं इनमें से कुछ पर यह प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है और कुछ पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है।

यदि विद्यालय का वातावरण कमजोर एवं नकारात्मक होगा तो इन गुणों और कौशलों के विकास के स्थान पर उसमें मनोविकार, तनाव, भग्नाशा व असामाजिक व्यवहार की प्रवृति विकसित हो सकती है। इस संबंध में अनेक शोधकार्य हो चुके हैं जिनसे यह वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो चुका है। सृजनात्मकता एवं विद्यालय वातावरण के महत्व को देखते हुए शोधकत्ताओं के लिये यह विषय उच्च प्राथमिकता में शामिल होना चाहिये था। लेकिन भारत में विश्वविद्यालय स्तर पर, उच्च अध्ययन एवं प्रशिक्षण संस्थानों के स्तर पर एवं जिला प्रशिक्षण संस्थानों के स्तर पर नाम मात्र के शोधकार्य इस क्षेत्र में हुए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जितने शोध अब तक हुए हैं इतने महत्वपूर्ण विषय को जिसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है जिस पर हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता निर्भर है भारत में अभी तक इसे महत्वपूर्ण नहीं समझा गया है। इतने महत्वपूर्ण विषय जिस पर बहुत कम शोध कार्य हुआ साथ ही विषय की महत्ता को देखते हुये इस क्षेत्र में ''रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालय वातावरण का उसमें अध्ययनरत विद्यार्थिर्यों की सृजनात्मकता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय को लेकर शोधकर्त्री ने अध्ययन करने का निश्चय किया।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है–

1. रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण सामान्य स्तर का है।
2. गैर सरकारी विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण सामान्य स्तर का है।
3. रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सामान्य स्तर की है।
5. गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सामान्य स्तर की है।
6. रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन : –

1. प्रस्तुत अध्ययन को राजस्थान राज्य के सीकर व चूरू जिले तक परिसीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन को उच्च माध्यमिक स्तर तक परिसीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्ष के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के रमसा तथा गैर सरकारी 500 विद्यार्थियों जिसमें (250 ग्रामीण तथा 250 शहरी) को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण –

1. **विद्यालयी वातावरण प्रष्नावली :**
   सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों विद्यालय वातावरण के उच्च माध्यमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले कक्षा **9** से **12** तक के विद्यार्थियों के लिये विद्यालय वातावरण प्रष्नावली की रचना की गयी।

2. **सृजनात्मकता का षाब्दिक परीक्षण : –**
   प्रो. बाकर मेहन्दी का सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण का उपयोग अध्ययन में किया गया है।

रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण मापनी के प्राप्तांकों के मध्य मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात मान की गणना।

न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात मान (cr Value)	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी	250	124.8	10.06	26.81	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी	250	99.56	10.99			

(df = N_1+N_2-2=250+250-2=498)

रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण मापनी के प्राप्तांकों के मध्य मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात मान का आरेखिय प्रदर्शन।

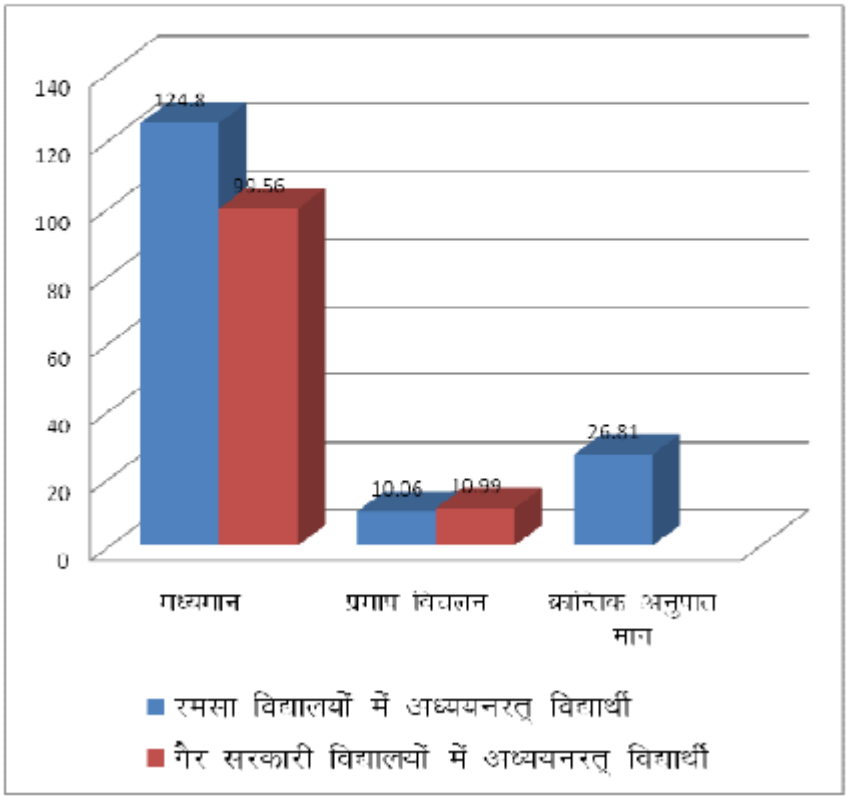

रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण से उच्च स्तर का पाया गया है।

रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्रवाहशीलता आयाम के प्राप्तांकों के मध्य मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात मान की गणना।

न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात मान (cr Value)	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी	250	37.99	6.67	3.45	सार्थक अन्तर है।	सार्थक अन्तर है।
गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी	250	36.28	4.12			

(df = N_1+N_2-2=250+250-2=498)

रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्रवाहशीलता आयाम के प्राप्तांकों के मध्य मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात मान का आरेखिय प्रदर्शन।

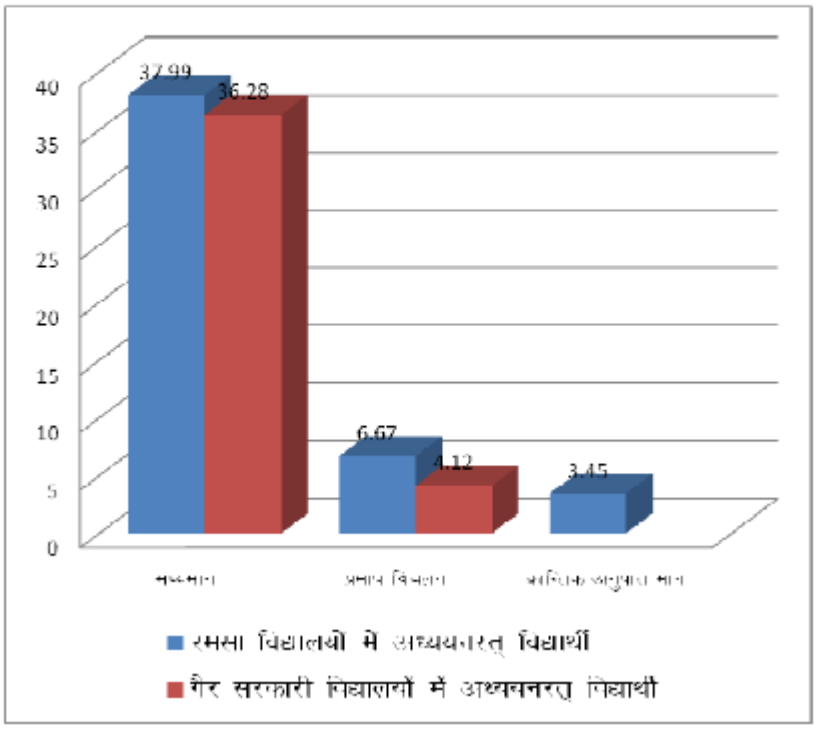

रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्रवाहषीलता आयाम में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष :–

1. रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण सामान्य स्तर का है।
2. गैर सरकारी विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण सामान्य स्तर का है।

3. रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया है। रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण से उच्च स्तर का पाया गया है।
4. ग्रामीण रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण से उच्च स्तर का पाया गया है।
5. षहरी रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया है। षहरी रमसा विद्यालयों का विद्यालयी वातावरण ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यालयी वातावरण से उच्च स्तर का पाया गया है।
6. रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सामान्य स्तर की है।
7. रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. ग्रामीण रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. षहरी रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।,
10. ग्रामीण तथा षहरी रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सामान्य स्तर की है।
12. गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. षहरी गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
15. ग्रामीण तथा षहरी गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
16. रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के लोचषीलता एवं मौलिकता आयाम में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्रवाहषीलता आयाम में सार्थक अन्तर है।

रमसा विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के प्रवाहषीलता आयाम का स्तर गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों के स्तर से उच्च स्तर का पाया गया है। रमसा तथा गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत्त विद्यार्थियों की सम्पूर्ण सृजनात्मकता में आंषिक अन्तर पाया गया है।

सुझाव :–

अभिभावकों हेतु सुझाव :–

1. अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बालकों को सृजनात्मकता को प्रोत्साहन दे और उन्हें सृजनात्मक कार्य करने के अवसर प्रदान करे।
2. अभिभावकों को अपने बालकों की सृजनात्मकता के विकास हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए।
3. अभिभावक को अपने बालकों के मित्रों से भी बातचीत करते रहना चाहिए ताकि उनमें सृजनात्मकता का विकास हो सके।
4. अभिभावकों को अपने बालकों की क्षमताओं तथा रचनात्मक प्रवृति का ध्यान होना चाहिए ताकि उसी के अनुरूप उनके व्यक्तित्व का पृष्ठपोषण कर सकें।
5. अभिभावकों को अपने बालकों के विचारों व उनकी भावनाओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपितु उनकी आवष्यकताओं को समझ कर उन्हें उचित दिषा व मार्गदर्षन प्रदान करना चाहिए जिससे वे अपना योगदान समाज व देष हेतु कर सकें।

षिक्षकों हेतु सुझाव :–

1. षिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी कार्यदक्षता ऐसी विकसित करनी चाहिए जो कि युवा पीढ़ी को सृजनषील बनाये तथा दिषा भ्रमित होने से बचाने में सहायक की भूमिका का निर्वाह करें।
2. षिक्षकों को परम्परागत षिक्षण व्यवस्था का परित्याग कर षिक्षण में नवीन षिक्षण व्यूह रचनाओं, विधियों आदि का प्रयोग करना चाहिए।
3. षिक्षकों का विद्यार्थियों से, प्रधानाचार्य से, अभिभावकों से एवं सहकर्मियों से व्यवहार अच्छा होना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थियों के लिए षिक्षक प्रतिमान (मॉडल) होते हैं जिनका अनुसरण विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है।
4. षिक्षकों को विद्यार्थियों द्वारा अर्जित उपलब्धियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए समय–समय पर पुरस्कार के माध्यम से उन्हें पुर्नबलित किया जाना चाहिए ताकि वे निरन्तर प्रगति हेतु प्रयासरत रह सकें।
5. विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के कार्यों को संपादित करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें सृजनात्मकता का विकास हो सके।
6. षिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रवृतियों की पहचान कर उनमें आवष्यक सुधार हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।
7. षिक्षक को चाहिए कि वे विद्यालय में एक संगठित टीम की भावना से षिक्षण कार्य करने का प्रयास करे जिससे विद्यालय वातावरण का षिक्षण के अनुरूप विकास हो सकेगा।

विद्यार्थियों हेतु सुझाव :–

1. विद्यार्थियों को अपने सहपाठियों से हमेषा दोस्ताना व्यवहार रखना चाहिए तथा मिलकर किये जाने वाले कार्य को खुषी के साथ करना चाहिए जिससे उनके समायोजन, सृजनात्मकता तथा नैतृत्व क्षमता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास हो सके।
2. विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपनी व्यक्तित्व की कमजोरियों को पहचान कर उसे दूर करने का प्रयास करें।
3. विद्यार्थियों को चाहिए कि वे जिस कार्य को करे उसे पूर्ण लगन व मेहनत से करें जिससे उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति हो सके।
4. विद्यार्थियों को को अपने अभिभावकों, षिक्षकों की अच्छी बातों को आदर्ष मूल्यों के रूप में स्वीकार करना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को को अपने प्रत्येक निर्णय में अभिभावकों, षिक्षकों व मित्रों का सहयोग लेना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को षिक्षा के साथ साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि स्वस्थ षरीर ही स्वस्थ मस्तिष्क का घर होता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. Joshi,kirat," Indian Psychilogy of education" Anveshika Indian Journal of teacher Education,NCERT,New Delhi
2. Singh,Dr.Sharwan,"Corruption in Education word Problems and solution" Vidhya megh,vidhya Publication,Meerut,No.86,July,2004 P.13
3. A Hbach,Philip ji "The question of corruption in Academic Bostan college,international Journal of Education Research Vol,31, 1999 P.295-302

Web sites-

1. http://nipccd.nic.in/reports/rawe.pdf
2. http://www.informaworld.com/cdip
3. https://www.bhaskar.com/news/RAJ-OTH-MAT-latest-churu-news-033004-1929245-NOR.html
4. http://www.ichowk.in/society/legal-rights-of-women-on-sexualharassement-domestic-violence/story/1/1562.html
5. http://www.census2011.co.in/census/district/427-churu.html

6. https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_states_ranking_by_literacy_rate
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Poverty_in_India#cite_note-90
8. https://www.youtube.com/watch?v=onF95Ok9qgY

– **सुखी चौधरी,** रिसर्च फैलो, पीएच.डी. (षिक्षा), टांटिया विष्वविद्यालय, **श्रीगंगानगर**
– **डॉ. (श्रीमती) राजकुमारी परिहार,** प्राचार्या, श्री माधव टी. टी. महाविद्यालय,
लाडनूं– 341306 (नागौर–राजस्थान)